

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 26, डिट्रिच बोन्होफ़र

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह डिट्रिच बोन्होफ़र पर सत्र 26 है।

आज 22 नवंबर है, और 1963 में इस दिन क्या हुआ था? बेशक, आइए देखें कि ग्रॉंट को पता है या नहीं।

ओह, हमारे पास कुछ लोग हैं जिन्होंने आज प्रकाश देखा। हमें लगा कि आप लोग चले गए हैं और थैंक्सगिविंग ब्रेक के लिए घर चले गए हैं। ठीक है, हम वास्तव में शुरू करने से पहले बस एक सवाल पूछ रहे हैं।

आज 22 नवंबर है, और 1963 में, 50 साल पहले; 50 साल पहले इस दिन क्या हुआ था? यह सभी अखबारों में छपा है। JFK, बिल्कुल JFK। अब, यहाँ वह बात है जो लोगों को समझ में नहीं आती।

चर्च के इतिहास में इस दिन, 22 नवंबर, 1963 को कुछ ऐसा हुआ, जिस दिन जे.एफ.के. की हत्या हुई थी। उस दिन सी.एस. लुईस की मृत्यु हो गई, और उन्हें कोई प्रेस नहीं मिली क्योंकि पूरी दुनिया का ध्यान जे.एफ.के. की हत्या पर केंद्रित था। इसलिए, सी.एस. लुईस की मृत्यु हो गई, और वास्तव में किसी ने उस पर ध्यान नहीं दिया।

मुझे लगता है कि कुछ ईसाई पत्रिकाओं ने ऐसा किया होगा। इसलिए, हमने 50 साल पहले इसी दिन सी.एस. लुईस को भी खो दिया था। इसलिए, यह एक बड़ी क्षति थी।

खैर, आज सिर्फ़ एक छोटी सी भक्ति के लिए, और उसमें हम डिट्रिच बोन्होफ़र के बारे में बात कर रहे हैं, मैं सिर्फ़ कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप से पढ़ना चाहता हूँ, और अगर आपने किताब नहीं पढ़ी है, तो आप किताब पढ़ना चाहेंगे। यह वास्तव में, यह एक शक्तिशाली किताब है। यह वास्तव में माउंट पर उपदेश पर आधारित है, और वह किताब की शुरुआत उस चीज़ के बारे में बात करके करता है जिसका हमने दूसरे दिन कक्षा में उल्लेख किया था: महंगा अनुग्रह।

सस्ता अनुग्रह हमारे चर्च का घातक दुश्मन है। हम आज महंगे अनुग्रह के लिए लड़ रहे हैं। सस्ते अनुग्रह का मतलब है अनुग्रह एक सिद्धांत, एक सिद्धांत, एक प्रणाली के रूप में।

इसका अर्थ है पापों की क्षमा को एक सामान्य सत्य के रूप में घोषित करना। ईश्वर के प्रेम को ईसाई धर्म में ईश्वर की अवधारणा के रूप में पढ़ाया जाता है। इस विचार के प्रति बौद्धिक सहमति पापों की क्षमा को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त मानी जाती है।

ऐसा माना जाता है कि जो चर्च अनुग्रह के सही सिद्धांत को मानता है, उसे वास्तव में उस अनुग्रह में भाग लेना चाहिए। ऐसे चर्च में, दुनिया अपने पापों के लिए एक सस्ता आवरण पाती है। किसी

पश्चात्ताप की आवश्यकता नहीं होती, पाप से मुक्ति पाने की कोई वास्तविक इच्छा तो बिल्कुल भी नहीं।

इसलिए, सस्ता अनुग्रह, परमेश्वर के जीवित वचन का इन्कार करने के बराबर है। वास्तव में, परमेश्वर के वचन के अवतार का इन्कार करना। सस्ते अनुग्रह का अर्थ है पापी के औचित्य के बिना पाप का औचित्य सिद्ध करना।

दूसरी ओर, महंगा अनुग्रह वह सुसमाचार है जिसे बार-बार खोजा जाना चाहिए, वह उपहार जिसे माँगा जाना चाहिए, और वह द्वार जिस पर मनुष्य को दस्तक देनी चाहिए। ऐसा अनुग्रह महंगा है क्योंकि यह हमें अनुसरण करने के लिए बुलाता है, और यह अनुग्रह है क्योंकि यह हमें यीशु मसीह का अनुसरण करने के लिए बुलाता है। यह महंगा है क्योंकि इसके लिए मनुष्य को अपना जीवन देना पड़ता है, और यह अनुग्रह है क्योंकि यह मनुष्य को उसका एकमात्र सच्चा जीवन देता है।

यह महंगा है क्योंकि यह पाप की निंदा करता है और अनुग्रह इसलिए क्योंकि यह पापी को उचित ठहराता है। सबसे बढ़कर, यह महंगा है क्योंकि इसके लिए परमेश्वर को अपने बेटे की जान देनी पड़ती है। आपको एक कीमत पर लाया गया है, और जिस चीज़ के लिए परमेश्वर को बहुत कुछ चुकाना पड़ा है, वह हमारे लिए सस्ती नहीं हो सकती।

सबसे बढ़कर, यह अनुग्रह है क्योंकि परमेश्वर ने अपने बेटे को हमारे जीवन के लिए चुकाने के लिए बहुत बड़ी कीमत नहीं समझी बल्कि उसे हमारे लिए दे दिया। महंगा अनुग्रह परमेश्वर का अवतार है - शिष्यत्व की कीमत।

तो, अगर आप लोगों ने कॉस्ट ऑफ डिसिपलशिप नहीं पढ़ी है, तो आप इसे अपनी पढ़ने की सूची में जोड़ना चाहेंगे। मैं अपने दो दोस्तों से पूछना चाहता हूँ जो अभी आए हैं, आज से 50 साल पहले क्या हुआ था? हाँ, 22 नवंबर, 1963 को। यह सभी अखबारों में छपा है।

क्या यह था? इसके लिए धन्यवाद। यह जॉन एफ. कैनेडी की हत्या थी। अब, चर्च के इतिहास में क्या हुआ? मुझे आश्चर्य है कि कौन जानता है।

50 साल पहले चर्च के इतिहास में क्या हुआ था? यह सीएस लुईस है, जिनकी मृत्यु 50 साल पहले उसी दिन हुई थी, जिस दिन जेएफके की मृत्यु हुई थी। हमने कक्षा में बताया कि किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया, क्योंकि सारा ध्यान जेएफके पर था। तो, ठीक है, अब हमारे पास पहले सच्चे विश्वासी हैं, और अब हमारे पास प्रकाश देखने वाले चार लोग हैं, और हमारे पास केवल एक धर्मत्यागी है।

तो, अब हम बस आगे बढ़ सकते हैं, और मुझे आशा है कि आपका थैंक्सगिविंग बहुत बढ़िया रहेगा। हम सोमवार से एक सप्ताह तक फिर से एक साथ नहीं होंगे, और उस बुधवार को आप मुझसे चार सवाल पूछना चाहेंगे क्योंकि अगले सप्ताह, सोमवार और बुधवार को, हम डिट्रिच बोनहोफ़र पर एक वीडियो देखेंगे जिसका नाम है मेमोरीज़ एंड पर्सपेक्टिव्स। शुक्रवार को, हम एक समीक्षा सत्र रखेंगे।

सोमवार को हम अपने व्याख्यान समाप्त कर लेंगे। अगले बुधवार को हम अपना दूसरा समीक्षा सत्र करेंगे। इसलिए, जब हम वापस आएं तो हमारे पास पाँच कक्षा दिन बचे होंगे।

तो, यह बहुत तेजी से आगे बढ़ता है। तो, हमें कहाँ होना चाहिए? हम डिट्रिच बोनहोफर में हैं, एक पृष्ठभूमि, दो धर्मशास्त्र और मैं सिर्फ उनके धर्मशास्त्र के कुछ पहलुओं का उल्लेख करना चाहता था। पहला जिसका मैंने उल्लेख किया वह था चर्च और एक समुदाय के रूप में चर्च।

तो, यह डिट्रिच बोनहोफर के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। और फिर दूसरा जो हम नहीं पढ़ पाए, मुझे नहीं लगता, क्राइस्टोलॉजी। क्या हम उनके क्राइस्टोलॉजी तक पहुँच पाए? नहीं।

हम उनके क्राइस्टोलॉजी तक नहीं पहुँच पाए। इसलिए, मसीह का सिद्धांत, फिर से, बहुत महत्वपूर्ण है। आपने देखा कि हम शिष्यत्व की कीमत के बारे में क्या पढ़ रहे थे।

सुसमाचार क्या है? महँगा अनुग्रह क्या है? महँगा अनुग्रह परमेश्वर का अवतार है। तो, महँगा अनुग्रह परमेश्वर का यीशु मसीह के व्यक्तित्व में देह में आना है। तो, यह महँगा अनुग्रह है।

तो, यीशु मसीह उनके धर्मशास्त्र का केंद्र है, उनके धर्मशास्त्र का केंद्र है। सब कुछ उसके और अवतार के इर्द-गिर्द घूमता है। उन्होंने वास्तव में एक किताब लिखी है।

उनकी एक किताब का नाम था क्राइस्ट द सेंटर। तो, इससे आपको अंदाजा हो जाता है कि यह उनके लिए कितना महत्वपूर्ण था। तो, अब, वह किसका केंद्र है? वह सभी वास्तविकता का केंद्र है।

मसीह सभी वास्तविकता का केंद्र है। मसीह हर उस चीज़ का केंद्र है जो मौजूद है। और इसलिए, डिट्रिच बोनहोफर के लिए मसीह दुनिया को एकजुट करने वाला कारक है।

अब, दुनिया को शायद यह पता न हो, लेकिन धर्मशास्त्रीय रूप से, बोनहोफर का मानना था कि मसीह वास्तविकता का केंद्र है, जिसमें दुनिया की वास्तविकता भी शामिल है। अब, यह मुझे यह कहने के लिए प्रेरित करता है कि कभी-कभी मैं गॉर्डन के छात्रों को यह कहते हुए सुनता हूँ, अब, मुझे पता है कि आप में से कोई भी इस कक्षा के बाद फिर कभी ऐसा नहीं कहेगा। कभी-कभी मैं गॉर्डन के छात्रों को यह कहते हुए सुनता हूँ, जब मैं वास्तविक दुनिया में बाहर निकलता हूँ, अब, शायद आप में से किसी ने कभी ऐसा नहीं कहा हो, लेकिन जब मैं वास्तविक दुनिया में बाहर निकलता हूँ, तो मेरे पास आपके लिए समाचार होता है।

यह वास्तविक दुनिया है। कोई भी समुदाय जो इस संदेश को गंभीरता से लेता है, कि मसीह सामुदायिक जीवन का केंद्र है, जिसे हम गॉर्डन में बहुत गंभीरता से लेते हैं, इसका मतलब है कि यह वास्तविक दुनिया है। यह वास्तविकता है, जैसा कि डिट्रिच बोनहोफर ने इसे चित्रित किया है।

जब आप गॉर्डन कॉलेज से बाहर निकलते हैं, तो आप वास्तविक दुनिया में प्रवेश नहीं कर रहे होते हैं। एक अर्थ में, आप अवास्तविक दुनिया में प्रवेश कर रहे हैं क्योंकि आप ऐसी दुनिया में

प्रवेश कर रहे हैं जो मसीह को वास्तविकता के केंद्र के रूप में नहीं पहचानती है। इसलिए, मुझे पता है कि आप में से कोई भी अब से अपने जीवन में कभी नहीं कहेगा कि जब मैं वास्तविक दुनिया में आता हूँ, तो आप वास्तविक दुनिया में होते हैं। गॉर्डन कॉलेज में वास्तविक दुनिया में आपका स्वागत है।

तो, यह बात है, और आप एक बहुत ही अवास्तविक दुनिया में जा रहे हैं, जहाँ तक बोनहोफ़र का सवाल है, वैसे भी। तो, वह केंद्र है। अब, मसीह के बारे में कुछ बातें जो इस सारी वास्तविकता के केंद्र के रूप में हैं।

एक तरह से तीन तरह की छवियाँ। एक छवि यह है कि मसीह जो आया और वास्तविकता का केंद्र है, वह एक पीड़ित मसीह है। ईश्वर एक पीड़ित ईश्वर है।

इसलिए, ईश्वर मानवता की पीड़ा को समझता है और उसे समझता है। इसलिए, जब हम पीड़ित होते हैं, तो ईश्वर भी पीड़ित होता है क्योंकि वह एक पीड़ित ईश्वर है। यह एक तरह से एक छवि है।

दूसरी छवि मध्यस्थ के रूप में मसीह की है। मसीह आपके और मेरे बीच मध्यस्थ है। मसीह हमारे और संसार के बीच मध्यस्थ है।

मसीह हमारे और ईश्वर के बीच मध्यस्थ है। ईश्वर आपका भला करे। इसलिए, बोनहोफ़र के लिए मसीह का मध्यस्थीय कार्य बहुत महत्वपूर्ण है।

वह मसीह के बारे में बहुत कुछ कहते हैं, एक मध्यस्थ के रूप में। और फिर तीसरी छवि एक तरह के प्रश्न की छवि है। तीसरी छवि एक प्रश्न है: आज हमारे लिए मसीह कौन है? यह प्रश्न हमेशा डिट्रिच बोनहोफ़र की सोच में सबसे ऊपर रहता है।

आज हमारे लिए मसीह कौन है? आज एक समुदाय के रूप में मसीह हमारे लिए क्या मायने रखता है? आज दुनिया के लिए मसीह का क्या मतलब है? तो, जब बोनहोफ़र अपने क्राइस्टोलॉजी से निपटते हैं, तो उनके पास ये तीन तरह की छवियाँ होती हैं। तो, नंबर एक है चर्च विज्ञान। दरअसल, हमारे पास नंबर दो है, धर्मशास्त्र, बोनहोफ़र के तहत, और फिर हमने कुछ चीजों का उल्लेख किया है।

तो, नंबर एक है चर्च शास्त्र। नंबर दो है क्राइस्टोलॉजी। नंबर तीन है धर्म, उद्धारण-अनउद्धारण, और जिसे उन्होंने धर्म-रहित ईसाई धर्म कहा।

धर्म और धर्म-रहित ईसाई धर्म। अब, इसे कुछ स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, और बोनहोफ़र को यहाँ बहुत आसानी से गलत समझा जा सकता है। धर्म से उनका मतलब है कि ईश्वर को खोजने, ईश्वर को जानने, ईश्वर के बारे में जानने के हमारे सभी प्रयास ही धर्म हैं।

और उसे धर्म पसंद नहीं है, धर्म शब्द पसंद नहीं है, धर्म की अवधारणा पसंद नहीं है। क्योंकि धर्म लोगों को यह धारणा देता है कि ईश्वर को खोजना हमारे ऊपर है, ईश्वर को जानना हमारे ऊपर है, इत्यादि। इसलिए, हम ईश्वर को खोजने के लिए इन सभी तरह के धार्मिक कार्यों से गुजरते हैं।

नहीं, डिट्रिच बोनहोफर के लिए यह आगे का रास्ता नहीं है। आगे का रास्ता वही है जिसे उन्होंने धर्म-रहित ईसाई धर्म कहा है, और धर्म-रहित ईसाई धर्म का मतलब है कि ईश्वर हमें मसीह में पाता है। और जब ईश्वर हमें मसीह में पाता है, तो इसका परिणाम यह होता है कि, मसीह में अपनी कृपा से हमें पाकर, हम उस तरह का जीवन जीना चाहते हैं जो उसे पसंद हो, और हम उन सिद्धांतों पर विश्वास करना चाहते हैं जो बाइबल की व्याख्या करते हैं, इत्यादि।

लेकिन उनके लिए धर्म बुरी खबर है क्योंकि हम सभी किसी न किसी तरह से ईश्वर को खोजने की कोशिश कर रहे हैं, और यह बुरी खबर है। बाइबल की कहानी ईश्वर को खोजने के बारे में नहीं है। बाइबल की कहानी ईश्वर द्वारा हमें मसीह में खोजने के बारे में है।

तो, धर्म और धर्म-रहित ईसाई धर्म। ठीक है, चौथी बात दुनिया है। बोनहोफर ने दुनिया के बारे में क्या कहा? वैसे, वह दुनिया के बारे में बहुत कुछ कहता है, लेकिन दुनिया के बारे में वह जो पहली बात कहता है वह यह है कि दुनिया भगवान द्वारा बनाई गई थी।

भगवान ने दुनिया बनाई है। इसलिए, यह स्वाभाविक रूप से अच्छा है। इसलिए, बोनहोफर ऐसा नहीं करेंगे, आप जानते हैं, बोनहोफर को ऐसे लोग पसंद नहीं हैं जो कहते हैं, मुझे इस दुनिया से जितनी जल्दी हो सके बाहर निकालो, आप जानते हैं, क्योंकि यह दुनिया मेरा घर नहीं है।

मैं बस गुज़र रहा हूँ। खैर, आपको यह विचार आता है कि अगर यह दुनिया आपका घर नहीं है, तो आप बस इस तथ्य से गुज़र रहे हैं कि दुनिया बहुत अच्छी नहीं है। आप जानते हैं, दुनिया वास्तव में बुरी है, और इसी तरह।

बोनहोफर को यह सब पसंद नहीं आएगा। यह दुनिया भगवान ने बनाई है, और यह हम पर निर्भर है कि हम दुनिया को वैसा बनाएं जैसा भगवान ने इसे बनाने का इरादा किया था। इसलिए, स्वाभाविक रूप से, हम यहाँ एक स्वाभाविक रूप से अच्छी दुनिया में रह रहे हैं, और उसने हमें इस दुनिया में एक उद्देश्य के लिए रखा है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

अब, यह दिखाने के लिए कि दुनिया कितनी अच्छी है, भगवान खुद देह में, अवतार में आए। इससे पता चलता है कि भगवान अपनी सृष्टि के लिए कितने चिंतित थे, कि वह खुद देह में आएंगे। इसलिए, डिट्रिच बोनहोफर के लिए अवतार, दुनिया की पुष्टि है।

तो, यह उसके लिए बहुत, बहुत महत्वपूर्ण है। तो, ठीक है। अब, बोनहोफर कहते हैं, दुनिया के संदर्भ में, बोनहोफर कहते हैं, हमें दुनिया का सामना करना चाहिए।

हम ईसाइयों को दुनिया का सामना करना चाहिए। हमें दुनिया में रहना चाहिए। हमें मठों में नहीं रहना चाहिए, बल्कि हमें दुनिया में रहना चाहिए, दुनिया का सामना करना चाहिए।

हम यह कैसे करते हैं? हम इसे चर्च के माध्यम से करते हैं। हम इसे मसीह के शरीर के माध्यम से, समुदाय के माध्यम से करते हैं। तो, चर्च समुदाय, मसीह का शरीर, दुनिया का सामना करता है, और यह दुनिया का सामना तीन बहुत ही अलग-अलग तरीकों से करता है।

तो, दुनिया में जीने के तीन तरीके हैं: हम दुनिया का सामना करते हैं, और हम दुनिया में भाग लेते हैं। ठीक है। पहला तरीका है प्रार्थना करना।

अब, आप सोचेंगे, तुरंत, आप कहेंगे, डिट्रिच बोनहोफर, आप किस बारे में बात कर रहे हैं? प्रार्थना एक बहुत ही निजी चीज़ है। यह चर्च के भीतर की चीज़ है और इसी तरह की दूसरी चीज़ें हैं। नहीं, क्योंकि हम दुनिया के लिए प्रार्थना करते हैं।

जब हम प्रार्थना में दुनिया को ध्यान में रखते हैं, तो हम दुनिया को ध्यान में रखते हैं, दोनों ही रूप में ईश्वर की रचना के रूप में और मन में ऐसी दुनिया के रूप में जिसे मुक्ति की आवश्यकता है। इसलिए, प्रार्थना वह पहला तरीका है जिससे हम दुनिया का सामना करते हैं। नंबर दो, हम कभी-कभी दुनिया का सामना दुख में करते हैं।

पीड़ा में। यदि सुसमाचार का प्रचार सही ढंग से किया जा रहा है, तो उस सुसमाचार का प्रचार करने के परिणाम होंगे, और चर्च एक पीड़ित चर्च है। लेकिन चर्च का दुख यह दर्शाता है कि वह दुनिया का सामना करने में अपना काम कर रहा है।

अगर चर्च सिर्फ दुनिया की तरह दिखता है, तो वह अपना काम नहीं कर रहा है। यह वह चर्च नहीं है जिसे परमेश्वर ने कहा है। ठीक है।

और तीसरा तरीका, और आपको इस बात से आश्चर्य नहीं होगा क्योंकि वह एक अच्छा लूथरन है, याद रखें। तो, तीसरा तरीका आपके व्यवसाय के माध्यम से, आपके आह्वान के माध्यम से है। इस तरह आप अपने व्यवसाय के माध्यम से दुनिया का सामना करते हैं।

हमने पहले ही कहा है, जब हमने इस बारे में बात की थी, सभी व्यवसाय समान रूप से योग्य हैं। यह अच्छा लूथरन सिद्धांत है। याद रखें कि बोनहोफर इस पर क्या कहने जा रहे हैं।

सभी पेशे समान रूप से योग्य हैं। कोई बेहतर पेशा या खराब पेशा नहीं है। सभी पेशे एक ही स्तर पर हैं।

तो, अपने कामों के ज़रिए हम दुनिया का सामना करते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है। तो, यह वाकई बहुत महत्वपूर्ण है।

ठीक है। अब, दुनिया के साथ संबंधों के संदर्भ में, यहाँ वह इस बात पर चर्चा करता है कि हमें दुनिया में किसकी देखभाल करनी चाहिए और दुनिया में सरकार के साथ हमारा रिश्ता कैसा होना चाहिए। तो, सबसे पहले, हमें चर्च के रूप में, मसीह के शरीर के रूप में दुनिया में किसकी देखभाल करनी चाहिए? दुनिया के लोगों की देखभाल करने की हमारी क्या ज़िम्मेदारी है? खैर,

हमें देखभाल करनी है, खासकर दुनिया के बहिष्कृत लोगों, बेघर, असहाय और हाशिए पर पड़े लोगों की।

ये वे लोग हैं जिनके पास हमें हर समय पहुंचना चाहिए। ठीक है। और बोनहोफर के लिए इसका क्या मतलब था? इसका मतलब यहूदियों के साथ खड़ा होना था क्योंकि कौन हाशिए पर था? कौन मारा जा रहा था? कौन यहूदी बस्तियों में डाला जा रहा था? कौन यातना शिविरों में ले जाया जा रहा था? ये यहूदी थे।

इसलिए, डिट्रिच बोनहोफर ने न्यूयॉर्क और अश्वेत समुदाय से जो सबक सीखा, उसे अपने साथ जर्मनी ले गए और उन्होंने कहा कि चर्च को यहूदियों के साथ खड़ा होना चाहिए। और इसलिए, वे यहूदियों के साथ खड़े हुए। और उन्होंने हिटलर की हत्या के लिए भी यहूदियों की ओर से काम किया, इसमें कोई संदेह नहीं है।

ठीक है। तो, एक बात है: हमें दुनिया में किसकी देखभाल करनी चाहिए? जब हम दुनिया को देखते हैं, तो हमें किन लोगों की सेवा करनी चाहिए? दूसरा, अब, सरकार के साथ हमारा रिश्ता कैसा होना चाहिए? ठीक है। खैर, याद रखें, वह एक अच्छा लूथरन है।

तो, याद रखें, वह यह मानने जा रहा है कि चर्च ईश्वर द्वारा नियुक्त है और सरकार ईश्वर द्वारा नियुक्त है। तो, उसके पास चर्च और राज्य के बारे में इस तरह की समझ होगी। सवाल यह है कि जब राज्य अपनी शक्ति का अतिक्रमण करता है तो आप क्या करते हैं? जब कोई राज्य नहीं रह जाता है, तो आप क्या करते हैं, जाहिर है, अब ऐसा राज्य नहीं रह जाता है जिसे ईश्वर ने नियुक्त किया हो? जब कोई राज्य नाज़ियों की तरह क्रूर हो जाता है तो आप क्या करते हैं? आप क्या करते हैं? खैर, बोनहोफर ने कहा, हम इसे फ़िल्म में भी देखेंगे। बोनहोफर ने कहा, आपको तीन काम करने होंगे।

जब राज्य, और फिर से, वीडियो यह दिखाएगा, लेकिन जब राज्य एक गैर-राज्य के रूप में कार्य करता है, जब सरकार एक गैर-सरकारी के रूप में कार्य करती है और, जाहिर है, अपनी शक्ति की सीमाओं को पार कर रही है, तो ये तीन चीजें हैं जो आपको करनी चाहिए। नंबर एक, आपको राज्य को उसकी शक्ति की सीमाओं की याद दिलानी होगी। चर्च को राज्य से बात करने, राज्य के नेताओं से बात करने और राज्य को यह याद दिलाने का साहस होना चाहिए कि उसकी शक्तियाँ ईश्वर द्वारा सीमित हैं।

अगर आप उन शक्तियों का अतिक्रमण कर रहे हैं, तो भगवान आपको इसके लिए दंडित करेंगे। जब आप हिटलर के शासन में रह रहे हों, तो उस शासन को यह याद दिलाने के लिए थोड़ी हिम्मत की ज़रूरत होती है कि उसने अपनी शक्ति की सीमा पार कर ली है। लेकिन यही पहली चीज़ है जो आपको करनी चाहिए।

दूसरा काम जो आप करते हैं वह है पीड़ितों के घावों पर पट्टी बांधना। यह कुछ हद तक उससे संबंधित है जो हमने पहले कहा था, लेकिन आप पीड़ितों के घावों पर पट्टी बांधते हैं। जहां सत्ता के

दुरुपयोग के शिकार हैं, आपको उनके साथ खड़ा होना चाहिए और उनकी देखभाल करनी चाहिए।

बोनहोफर के अनुसार, इस मामले में आप पीड़ितों के घावों पर पट्टी बांधते हैं, यहूदियों के। फिर, तीसरा, कल्पना, थोड़ा अजीब है। लेकिन यदि आवश्यक हो, यदि आवश्यक हो, तो बोनहोफर ने कहा, आप पहिये में एक कील लगाते हैं।

अब, यह कल्पना सड़क पर चलती हुई एक कार की है। आप इस कार को सड़क पर चलते हुए देखते हैं। आपको जाकर एक बड़ी छड़ी लेनी है, और आपको कार के पहिये को जाम करना है ताकि कार अब और काम न कर सके।

यदि आवश्यक हो, तो आप पहिये में कील ठोक देते हैं। यदि आवश्यक हो, तो आप उस कार को आगे चलने से रोक देते हैं। यदि आवश्यक हो।

खैर, उसने सोचा कि हिटलर को मारने की साजिश में शामिल होना ज़रूरी था, इसलिए उसने पहिए में एक कील ठोक दी। उसने पहिए में एक कील ठोकने की कोशिश की। बोनहोफ़र ने पूछा कि इसके लिए वह जिस दूसरी कल्पना का इस्तेमाल करता है, वह कहती है कि अगर आप सड़क पर एक कार को जाते हुए देखते हैं और सड़क पर लोगों की एक बड़ी भीड़ है और एक कार सड़क पर चल रही है और एक पागल आदमी गाड़ी चला रहा है और वह हर जगह घूम रहा है और यह स्पष्ट है कि वह उन सभी लोगों को कुचलने वाला है, तो आप क्या करने की कोशिश करेंगे? आप कार में घुसने की कोशिश करेंगे और पागल आदमी से गाड़ी का पहिया छीन लेंगे, पागल आदमी से कार का नियंत्रण छीन लेंगे।

खैर, यह समझना आसान है कि बोनहोफ़र किस बारे में बात कर रहे हैं क्योंकि नाज़ी सरकार एक बेकाबू कार की तरह थी, जो लोगों का कत्लेआम कर रही थी। अब समय आ गया है कि हम उस कार में कूदें, पहिया पकड़ें और कार को खुद नियंत्रित करें। तो ये तीन तरह की चीजें हैं, राज्य से संबंधित होने के मामले में, ये तीन चीजें हैं जो आप करते हैं।

तो यह बोनहोफ़र के लिए महत्वपूर्ण था। ठीक है, तो यह डिट्रिच बोनहोफ़र है, धर्मशास्त्र की पहली पृष्ठभूमि, बस वे धार्मिक बिंदु, चर्च विज्ञान, क्राइस्टोलॉजी, धर्म और दुनिया। तो हम डिट्रिच बोनहोफ़र से आगे बढ़ने जा रहे हैं, और मुझे पता है कि हम दो दिनों, सोमवार और बुधवार को यादों और दृष्टिकोणों में बहुत कुछ देखने जा रहे हैं, और मेरे पास आपके लिए एक छोटी सी शीट है ताकि आप कुछ नोट्स लिख सकें।

लेकिन सोमवार को वीडियो देखने से पहले क्या कोई सवाल है? बोनहोफर के बारे में कोई सवाल? एक बहुत ही उल्लेखनीय व्यक्ति। अगर आप एक चीज़ पढ़ने जा रहे हैं, तो यह एट द कॉस्ट ऑफ़ डिसिपलशिप होनी चाहिए। अगर आप बोनहोफर की दूसरी किताब पढ़ने जा रहे हैं, तो इसका नाम लाइफ़ टुगेदर होना चाहिए।

लेकिन क्या डिट्रिच बोनहोफ़र के बारे में कोई सवाल है? टेड और मैं सोसाइटी ऑफ़ बाइबिलिकल लिटरेचर और अमेरिकन एकेडमी ऑफ़ रिलिजन की बैठकों में जाएंगे, और मैं

जिस सोसाइटी से जुड़ा हूँ, उनमें से एक इंटरनेशनल बोनहोफ़र सोसाइटी है। तो बाल्टीमोर में इंटरनेशनल बोनहोफ़र सोसाइटी की तीन बैठकें हैं, इसलिए हम बोनहोफ़र के बारे में पढ़े गए शोधपत्र सुनेंगे और बोनहोफ़र के बारे में हाल की किताबों के बारे में बात करेंगे, इसलिए यह बहुत दिलचस्प है। ठीक है, चलो डी, द्वितीय वेटिकन परिषद पर चलते हैं, क्योंकि द्वितीय वेटिकन परिषद डिट्रिच बोनहोफ़र से लेकर वर्तमान तक इस तरह के धार्मिक विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी।

ठीक है, और हम यहाँ पोप जॉन XXIII का ज़िक्र करने जा रहे हैं। देखते हैं कि मैंने उनकी तारीख़ बताई है या नहीं। नहीं, मैंने नहीं बताई।

मुझे नहीं लगता कि मैंने उसे यहाँ रखा है... बस मुझे यहाँ देखने दो। ओह, माफ़ करना। आप जानते हैं कि मैं इसके साथ कैसा हूँ, इसलिए आप समझ जाएँगे।

ठीक है, हम नीचे आ रहे हैं... ओह, वह वहाँ है। ठीक है, भगवान उसका दिल आशीर्वाद दें। ठीक है, तो हम उल्लेख करना चाहते हैं, और यह आपकी सूची में है, पोप जॉन XXIII, 1881 से 1963 तक।

ठीक है, ठीक है, पोप जॉन XXIII। अब, पोप के रूप में उनके बारे में बस कुछ शब्द हैं: वे 1958 में पोप बने, इसलिए उनके पोपत्व के संदर्भ में, वे 58 से 63 थे। अब, पोप जॉन XXIII के चुनाव के साथ बहुत, बहुत दिलचस्प है।

ऐसा लगता है कि जैसे भी, रोमन कैथोलिक चर्च इस बात पर सहमत नहीं हो पाया कि पोप कौन होना चाहिए। इसलिए उन्होंने इस व्यक्ति को चुना, पोप जॉन... उसने पोप जॉन XXIII नाम लिया, और उसे कार्यवाहक पोप कहा गया। वह मरने तक रोमन कैथोलिक चर्च की देखभाल करने वाला था, और फिर हम एक वास्तविक पोप को वहाँ रखेंगे, एक तरह से, कोई ऐसा व्यक्ति जो वास्तव में हमें भविष्य में ले जा सके।

तो, पोप जॉन XXIII, कार्यवाहक पोप, और आश्चर्य की बात है, आश्चर्य की बात है, वह बिल्कुल भी कार्यवाहक पोप नहीं थे। और उनमें से एक... मुझे लगता है कि मेरे पास यह है, लेकिन मुझे बस देखना है कि क्या मेरे पास है। हाँ, अगर मेरे पास नहीं है, तो नहीं।

ठीक है, कार्यवाहक पोप। मुझे लगा कि मैंने इसे पावरपॉइंट में डाल दिया है, लेकिन मैंने ऐसा नहीं किया, इसलिए इसके लिए मुझे धन्यवाद। ठीक है।

आश्चर्य, आश्चर्य, उन्होंने तुरंत ही लिख दिया... या तुरंत नहीं, लेकिन अपने पोपत्व के दौरान, उन्होंने एक ऐसा विश्वव्यापी पत्र लिखा जो एक शक्तिशाली विश्वव्यापी पत्र था, और इसे कहा जाता था... और मैंने इसे नीचे नहीं रखा, इसलिए मैं इसे आपके लिए लिखूंगा। इसे पेसम, पेसम, पेसम, पेसम कहा जाता था। और फिर शब्द इन, और फिर शब्द टेरिस, टेरिस, पेसम इन टेरिस।

और इसलिए पेसम इन टेरिस , जिसका मतलब क्या है? आप इसे देखकर लगभग बता सकते हैं। इसका मतलब क्या है? धरती पर शांति, दुनिया में शांति, धरती पर शांति। और पोप के रूप में वह जो करता है वह यह है कि वह इस दुनिया में शांति लाने की कोशिश के पूरे कारोबार में शामिल हो जाता है।

और वह कहते हैं कि हमें शालोम, यानी धरती पर शांति तभी मिलेगी जब सभी देशों के बीच सहयोग होगा। राष्ट्रों को सत्ता के लिए अपने दावे को अलग रखना होगा, और उन्हें सभी देशों को समान रूप से मेज पर बैठने और शांति के बारे में बात करने के योग्य मानना होगा। लेकिन पेसम इन टेरिस , धरती पर शांति, 20वीं सदी के मध्य में एक प्रमुख दस्तावेज़ है।

अब, आपको उस समय में रहना होगा ताकि आप समझ सकें कि पेसम इन टेरिस कितना महत्वपूर्ण था क्योंकि हम... एक समय पर, हम परमाणु युद्ध के कगार पर थे। और फिर, यह आपकी दुनिया से एक अलग दुनिया थी, मुझे इसका एहसास है, लेकिन आप कल्पना नहीं कर सकते कि जब रूसियों ने क्यूबा में मिसाइलें रखीं तो कैसा लगा। और रूसियों ने क्यूबा में मिसाइलें रखीं, संयुक्त राज्य अमेरिका की भूमि से 90 मील दूर, क्यूबा में परमाणु ऊर्जा से चलने वाली मिसाइलें।

आप कल्पना भी नहीं कर सकते कि यह कैसा था। हम अपनी सांस रोके हुए थे क्योंकि राष्ट्रपति कैनेडी, अब 22 नवंबर को, अपनी हत्या के बारे में बात कर रहे थे, लेकिन राष्ट्रपति कैनेडी टेलीविजन पर आने वाले थे और टेलीविजन पर राष्ट्रीय भाषण देने वाले थे। अब, वे पुराने दिन थे, इसलिए हम काले और सफेद की बात कर रहे थे।

हम बात कर रहे हैं कि कैसे आपको टीवी चालू करने के लिए उसके पास जाना पड़ता था। आपको टीवी चालू करने के लिए अपनी सीट से उठना पड़ता था। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मेरा मतलब है, यह अकल्पनीय है।

और यह ब्लैक एंड व्हाइट भी है। कोई रंगीन टेलीविजन नहीं है, इसलिए यह ब्लैक एंड व्हाइट है। मैं खुद जानता हूँ, जब मुझे पता चला कि वह भाषण दे रहे हैं, तो मैं घर भागा और अपने माता-पिता के साथ सोफे पर बैठ गया, और हम, आप लगभग, आप लगभग अपनी सांस रोक सकते थे क्योंकि उन्होंने टेलीविजन पर जो कहा, जेएफके ने टेलीविजन पर जो कहा वह श्री खुश्चेव से कह रहा था, क्यूबा से मिसाइलों को हटाओ, अन्यथा, और अन्यथा परमाणु युद्ध हो जाता।

तो, और हम में से कोई भी अब इस बारे में बात करने के लिए जीवित नहीं होता, मैं आपको बताता हूँ। तो, यह, यह, एक तरह से, परमाणु युद्ध के बहुत करीब था, और हम बस, आप जानते हैं, सोच रहे थे कि भविष्य क्या होने वाला था। अब, उस दुनिया के बीच, 50 के दशक की दुनिया में, 60 के दशक की शुरुआत में, जॉन पॉल XXIII शांति के एक आदमी के रूप में सामने आते हैं और दुनिया के नेताओं और अपने कैथोलिक चर्च से पडुआ मिंटरोस , पृथ्वी पर शांति के बारे में बात करते हैं।

अब, यह एक तरह से पर्याप्त होता, लेकिन उन्होंने जो दूसरा काम किया, अब वे कार्यवाहक पोप हैं, उन्होंने जो दूसरा काम किया वह यह था कि उन्होंने एक और चर्च परिषद, एक विश्वव्यापी चर्च परिषद बुलाई, और इसे द्वितीय वेटिकन परिषद कहा गया, और दूसरा, ठीक इसके नीचे, आपने इसे अपनी रूपरेखा में पाया है, द्वितीय वेटिकन परिषद की उपलब्धियाँ। द्वितीय वेटिकन परिषद अक्टूबर 1962 में बुलाई गई थी, एक विश्वव्यापी परिषद, और मैं आपको यह बता दूँ: उन्होंने इस द्वितीय वेटिकन परिषद द्वारा रोमन कैथोलिक चर्च को बदल दिया। द्वितीय वेटिकन परिषद के बाद रोमन कैथोलिक चर्च द्वितीय वेटिकन परिषद से पहले की तुलना में एक अलग चर्च है।

इसलिए, जो लोग सोचते थे कि कार्यवाहक पोप बनने जा रहा है, उसने रोमन कैथोलिक चर्च को तहस-नहस कर दिया, और वह कार्यवाहक पोप नहीं है; वह बस था। उसने जो किया वह आश्चर्यजनक था। इसलिए, अब हम जो करने जा रहे हैं वह केवल वेटिकन II की कुछ उपलब्धियों का उल्लेख करना है, इसलिए यह आपकी रूपरेखा के तहत D2 है यदि आप रूपरेखा का अनुसरण कर रहे हैं, तो द्वितीय वेटिकन परिषद की कुछ उपलब्धियाँ। इसके परिणामस्वरूप पूरा कैथोलिक चर्च बदल गया है।

ठीक है, और बस उन्हें सूचीबद्ध करें, लेकिन मैं उन्हें महत्व के आवश्यक क्रम में सूचीबद्ध नहीं कर रहा हूँ। हालाँकि, द्वितीय वेटिकन परिषद के बारे में एक पहली महत्वपूर्ण बात स्थानीय भाषा में मास थी। जब आप मास में जाते हैं, तो आप इसे अंग्रेजी, या स्पेनिश, या जर्मन में सुनेंगे, लैटिन में नहीं। अब, मैं वेटिकन II से पहले मास में जाता था, मैं कभी-कभी अपने दोस्तों के साथ मास में जाता था, और पूरी बात लैटिन में थी, इसलिए मेरे पास कोई नहीं था, मुझे नहीं पता था कि क्या हो रहा था, और मूल रूप से, ईमानदारी से कहूँ तो, उन्हें भी नहीं पता था, क्योंकि यह सब लैटिन में है।

अब, यह सब स्थानीय भाषा में होने जा रहा है, आप जानते हैं, इसलिए यह एक बहुत ही आश्चर्यजनक कदम है, आप जानते हैं, और इसी तरह, इसलिए। ठीक है, दूसरा, हमें क्या कहना चाहिए, एक अर्थ में, वेटिकन II की दूसरी उपलब्धि रोमन कैथोलिक और अन्य ईसाइयों के बीच विश्वव्यापी संवाद है, रोमन कैथोलिक और अन्य ईसाइयों के बीच संवाद का एक प्रकार का उद्घाटन, और वेटिकन II के बाद, गैर-ईसाई धर्मों के साथ भी संवाद का एक प्रकार का उद्घाटन, इसलिए रोमन कैथोलिक एन्क्लेव से बाहर निकलकर, गैर-ईसाई धर्मों का सामना करने की एक तरह की शुरुआत। तो, यह एक बहुत ही उल्लेखनीय बात थी, और आपको, फिर से, यह समझने के लिए कि यह कितना उल्लेखनीय था, आपको 60 के दशक में वापस जाना होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है, इसलिए, ईसाइयों और गैर-ईसाइयों, ईसाइयों, अन्य ईसाइयों के लिए एक विश्वव्यापी तरीके से आगे बढ़ना, लेकिन फिर इसे और भी व्यापक बनाना और गैर-ईसाइयों, यहूदियों, मुसलमानों, अन्य लोगों के साथ बात करना, इत्यादि।

एक अर्थ में मैं उसी का उत्पाद हूँ। मैं उसी का उत्पाद हूँ, इसका कारण यह है कि मैंने बोस्टन कॉलेज से पीएचडी की है, और जिस कार्यक्रम में मैंने प्रवेश लिया था, वह बोस्टन कॉलेज, एक रोमन कैथोलिक स्कूल और एंडोवर न्यूटन, एक प्रोटेस्टेंट स्कूल का कार्यक्रम था, और यह कार्यक्रम एक संयुक्त पीएचडी कार्यक्रम था। अब, बोस्टन कॉलेज डिग्री प्रदान करता है, लेकिन

यह कार्यक्रम प्रोटेस्टेंट और कैथोलिकों का एक कार्यक्रम था, साथ ही पीएचडी कार्यक्रम भी था, इसलिए यह बहुत दिलचस्प था।

तो, एक तरह से, मुझे उस तरह की सार्वभौमिकता से लाभ हुआ जो उन्होंने शुरू की थी। ठीक है, एक और चीज़ जो वेटिकन ॥ ने हासिल की वह थी बाइबल के अध्ययन का एक तरह का प्रसार। हम चाहते हैं कि हमारे लोग, हमारे अच्छे कैथोलिक; हम चाहते हैं कि हमारे लोग बाइबल का अध्ययन करें, और हम चाहते हैं कि वे बाइबल पढ़ें।

मुझे लगता है कि आप ईमानदारी से कह सकते हैं कि वेटिकन ॥ तक रोमन कैथोलिक आम लोगों के लिए बाइबल अप्राप्य थी, वास्तव में अनुपलब्ध थी। अब, वेटिकन ॥ के बाद, शास्त्रों के अध्ययन को प्रोत्साहित कर रहे हैं, और जो हुआ वह यह है कि बहुत सारे रोमन कैथोलिक विद्वान बाइबल के अनुवाद, अनुवाद और टिप्पणियों में शामिल हो गए। इसलिए, बहुत सारे रोमन कैथोलिक विद्वान इस दुनिया में आते हैं, और बहुत सारे रोमन कैथोलिक आम लोग बाइबल अध्ययन करना शुरू करते हैं क्योंकि वे बाइबल से सीखना चाहते हैं।

यह सब वेटिकन ॥ की वजह से है। यह सब जॉन XXIII की वजह से है, इसमें कोई संदेह नहीं है, तो। फिर अंतिम बात जो इसने की, और जाहिर है, हम यहाँ सिर्फ़ कुछ हाइलाइट्स दे रहे हैं ताकि आपको यह एहसास हो सके कि रोमन कैथोलिक चर्च कहाँ गया, लेकिन एक अंतिम बात जो इसने की वह यह है कि इसने रोमन कैथोलिक चर्च में कुछ बहुत ही संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा शुरू कर दी।

मुझे पहले होप का सवाल लेना चाहिए, और फिर हम, हाँ, होप। लैटिन वलोट आधिकारिक अनुवाद था, या, हाँ, आधिकारिक अनुवाद, लेकिन वेटिकन ॥ के बाद, उन्होंने अन्य अनुवादों, टिप्पणियों और एक तरह की शुरुआत की अनुमति दी। इसलिए, जब बाइबिल का रिकॉर्ड पढ़ा जा रहा है, तो इसे पढ़ा जा रहा है, या जब बाइबिल का पाठ पढ़ा जा रहा है, तो इसे आपकी भाषा में पढ़ा जा रहा है।

और फिर कुछ सुंदर, क्या आप में से किसी के पास स्टीव हंट था? आप इसे अभी ले रहे हैं। आपका दिल धन्य है। ओह, आप इसे लेना चाहते थे।

आप इसे अभी ले रहे हैं। और क्या उन्होंने पाठ्यक्रम में रेमंड ब्राउन का उल्लेख किया है? उन्होंने उनका बहुत उल्लेख किया है क्योंकि निश्चित रूप से इसमें कोई संदेह नहीं है कि महान विद्वानों में से एक, मैंने उन्हें तीन या चार बार व्याख्यान देते हुए सुना है। जॉन के सुसमाचार में महान विद्वानों में से एक रेमंड ब्राउन हैं, और रेमंड ब्राउन द्वारा एंकर बाइबिल श्रृंखला में दो-खंड की टिप्पणी वास्तव में एक क्लासिक पाठ है। खैर, यह, देखिए, यह सब वेटिकन ॥ के परिणामस्वरूप आता है, इसलिए हम इसके लिए वेटिकन ॥ को धन्यवाद दे सकते हैं।

अब, बहुत सारे मुद्दे खुल रहे हैं। मैं सिर्फ़ कुछ मुद्दों का ज़िक्र करना चाहूँगा जो तब से बातचीत में खुल गए हैं। अब, मुझे नहीं लगता कि वेटिकन ॥ ने यह सब कल्पना की होगी, लेकिन उन्होंने रोमन कैथोलिक चर्च के भीतर बातचीत खोली।

लेकिन, उदाहरण के लिए, महिला पुजारी। क्या हम रोमन कैथोलिक चर्च में महिला पुजारी रखने जा रहे हैं? अब, कैथोलिक इस बारे में इस तरह से बात कर रहे हैं, जैसा कि वे वेटिकन ॥ से पहले कभी नहीं कर सकते थे। इसमें कोई संदेह नहीं है।

अब, रोमन कैथोलिक चर्च में महिला पादरी होने काफ़ी दूर है, लेकिन इस पर चर्चा हो रही है। यह एक उदाहरण है। जन्म नियंत्रण।

जन्म नियंत्रण पर फिर से चर्चा हो रही है। कैथोलिक लोग वेटिकन द्वितीय से पहले इस पर चर्चा नहीं करते थे। वे उस पर चर्चा करते थे।

अब, पुजारियों की शादी। पिछले व्याख्यान में, हम पहले ही बता चुके हैं कि एंग्लिकन पादरी रोमन कैथोलिक चर्च में कैसे आए। अब, रोमन कैथोलिक चर्च रोमन कैथोलिक पादरियों के विवाहित होने के बारे में बात कर रहा है।

वेटिकन ॥ से पहले आपको ऐसा कभी नहीं मिला होगा। एक और जो मुझे याद है, सिर्फ़ इसलिए क्योंकि, आप जानते हैं, यह फिर से मेरा समय था, और वह करिश्माई आंदोलन है। फिर मुझे लगता है कि मैंने शायद कहानी बताई, अगर मैंने कहानी बताई, लेकिन जब मैं 1970 में बैरिंगटन कॉलेज गया, तो क्या यह कहानी किसी को जानी-पहचानी लगती है? और मेरे ऑफिसमेट, जब मैं पहले दिन अपने ऑफिस में गया, तो क्या किसी ने मेरी बात सुनी? ठीक है।

मैं बैरिंगटन कॉलेज में पहले ही दिन अपने दफ़्तर में गया और उन्होंने कहा, अच्छा, आपका दफ़्तर ऐसी-ऐसी जगह है। तो, मैंने चाबी ली, अंदर गया और दफ़्तर का दरवाज़ा खोला। काफ़ी बड़ा दफ़्तर था, लेकिन यह किताबों, फ़ाइल कैबिनेट और हर चीज़ से भरा हुआ था।

तो, मुझे पता था। फिर, कोने में एक छोटी सी डेस्क थी, खाली, तो मुझे पता था कि वह मेरी थी। तो, मैंने यह अनुमान लगाया।

तो, मैं अंदर चला गया, और फिर लगभग 15 मिनट तक कार्यालय में रहने के बाद, आया और दरवाजे पर भर गया क्योंकि वह एक लंबा, मज़बूत आदमी था, एक एंग्लिकन पादरी था, कॉलर, क्रॉस, और सब कुछ, टेरी फुलहम, जो गॉर्डन कॉलेज से स्नातक है, और वह मेरा कार्यालय साथी था। तो, मुझे अपने कार्यालय के साथी से मिलने का मौका मिला। मैं पहले कभी किसी एंग्लिकन पादरी से नहीं मिला था, इसलिए यह मेरे लिए नया था।

लेकिन हम नहीं थे, मैं बहुत लंबे समय तक साथ नहीं था जब मुझे पता चला कि वह एक करिश्माई एंग्लिकन पादरी था, और इससे यह और भी दिलचस्प हो गया। और फिर पहले कुछ हफ़्तों में, उन्होंने कहा, अब, मुझे आपको शिक्षित करने की ज़रूरत है। उन्होंने कहा, आपको यह समझने की ज़रूरत है कि रोड आइलैंड राज्य में, जो वैसे, देश में रोमन कैथोलिकों की प्रति व्यक्ति सबसे मज़बूत सांद्रता है, प्रति व्यक्ति, अब यह एक छोटा राज्य है, इसलिए रोमन कैथोलिकों की प्रति व्यक्ति सबसे मज़बूत सांद्रता, रोड आइलैंड राज्य में, जो रोमन कैथोलिक चर्च के लिए करिश्माई नवीनीकरण आंदोलन का जन्मस्थान था।

तो, उन्होंने कहा, हम तुम्हें शिक्षित करने जा रहे हैं। तो, उन्होंने मुझे रोमन कैथोलिक करिश्माई बैठकों में ले जाना शुरू कर दिया, जो करिश्माई रोमन कैथोलिकों से भरे चर्चों में बहुत दिलचस्प थीं। और फिर अंत में, एक सामूहिक प्रार्थना होती थी, तो।

लेकिन रोमन कैथोलिक चर्च, यह उन चीजों में से एक है जिस पर वे वेटिकन II के बाद चर्चा करने में सक्षम थे। करिश्माई आंदोलन क्या है, और क्या रोमन कैथोलिक चर्च को इसमें भाग लेना चाहिए? तो, वेटिकन II, कहने की जरूरत नहीं है, वेटिकन II और जॉन XXIII की वजह से चर्च अलग है। तब से यह कभी भी एक जैसा नहीं रहा। इस बारे में कोई सवाल नहीं है। ठीक है, आइए ई पर चलते हैं, उत्तर आधुनिक दुनिया में आधुनिकता का सामना करने वाले धार्मिक आंदोलन।

हम कुछ परिभाषाओं से शुरू करने जा रहे हैं, और मुझे पता है कि आपने शायद इन्हें अन्य पाठ्यक्रमों में पढ़ा होगा, इसलिए मैं इन्हें यहाँ बहुत जल्दी परिभाषित करने जा रहा हूँ। और आपने उन्हें यहाँ सूचीबद्ध किया है, आधुनिकता, ज्ञानोदय, आधुनिकतावाद, उत्तर आधुनिकतावाद, तो। ठीक है, ठीक है।

सबसे पहले, आधुनिकता। चलिए आधुनिकता की परिभाषा देते हैं। आधुनिकता की शुरुआत 18वीं सदी में हुई।

इसे एक तरह से 18वीं सदी के लिए जिम्मेदार ठहराया गया क्योंकि 18वीं सदी में पश्चिमी दुनिया में एक तरह का आत्मविश्वास विकसित हुआ था कि मानवता अपने लिए सोच सकती है। इसलिए, यह एक तरह से मानवता की बौद्धिक क्षमताओं पर निर्भरता थी। और इसलिए, इसे इस तरह की परिभाषा मिली, इसने उस तरह से आधुनिकता के बारे में बात की।

हम अपने लिए सोचने में सक्षम हैं। हम अपने लिए तर्क करने और तर्क करने में सक्षम हैं, आप जानते हैं, तो। यह एक है।

दूसरा है आत्मज्ञान। फिर से, आपने ये परिभाषाएँ पहले भी सुनी होंगी। लेकिन आत्मज्ञान, एक तरह से, लगभग एक ही समय पर होता है।

लेकिन वास्तव में, दुनिया को समझने के लिए तर्क पर जोर दिया गया था। इसलिए, ज्ञानोदय इस तथ्य पर जोर है कि हम अपने तर्क से दुनिया को समझने, दार्शनिक समझ बनाने, दुनिया को वैज्ञानिक समझ बनाने और दुनिया को सांस्कृतिक समझ बनाने में सक्षम हैं। बिना किसी सहायता के, हम ऐसा करने में सक्षम हैं।

और इस तरह की अवधि की शुरुआत हुई, जिसे ज्ञानोदय की अवधि के रूप में जाना जाता है। इसलिए, एक तरह से, इसने दुनिया के रहस्यों को दूर कर दिया। हालाँकि, और हम पहले ही इसका उल्लेख कर चुके हैं जब हमने इमैनुअल कांट के बारे में बात की थी।

हालाँकि, सौभाग्य से, ज्ञानोदय के दौरान ऐसे लोग थे जिन्होंने कहा कि याद रखें कि बुद्धिवाद की सीमाएँ हैं। बुद्धिवाद ज्ञानोदय की पहचान है, लेकिन याद रखें कि बुद्धिवाद की सीमाएँ हैं। कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हम सिर्फ तर्क से नहीं जान सकते।

और इमैनुअल कांट के लिए, इसका मतलब ईश्वर था, उदाहरण के लिए। इसका निश्चित रूप से मतलब था, उदाहरण के लिए, परलोक। इसका निश्चित रूप से मतलब था कि, केवल तर्क से, हम नैतिकता, नैतिकता और इसी तरह की अन्य बातों को नहीं समझ सकते।

तो, वहाँ सीमाएँ हैं। नंबर तीन आधुनिकता है। हम आधुनिकता को क्या कहेंगे? आधुनिकता 18वीं सदी में हमने जो सीखा था, उसका 19वीं सदी में अनुप्रयोग है।

तो, आधुनिकतावाद वह है जो हमने ज्ञानोदय से सीखा है और उसे 19वीं सदी में लागू करना है। ठीक है। अब, इसके तीन परिणाम हुए।

तो, आधुनिकतावाद, ज्ञानोदय को गंभीरता से लेते हुए, इसे 19वीं सदी में लागू करते हुए, तीन परिणाम सामने आए। और मैंने उनका उल्लेख केवल इसलिए किया क्योंकि हमने पाठ्यक्रम में पहले ही उनका उल्लेख किया है। तीन परिणाम हैं, पहला, निश्चित रूप से सिद्धांत के प्रति आलोचनात्मक रवैया, यहाँ तक कि सिद्धांत के प्रति संदेहपूर्ण रवैया, और चर्च के सिद्धांतों के प्रति, वे सिद्धांत जो 19वीं सदी में चर्च द्वारा प्रचारित किए गए थे, और विशेष रूप से वे सिद्धांत जो क्राइस्टोलॉजी से संबंधित थे, विशेष रूप से वे सिद्धांत जो मसीह की प्रकृति और मोक्ष, सोटेरियोलॉजी से संबंधित थे।

तो, यह वास्तव में 19वीं सदी में आधुनिकतावाद का हिस्सा था, ईसाई सिद्धांतों के बारे में यह बहुत ही संदेहपूर्ण, आलोचनात्मक रवैया। नंबर दो वह है जिसका हमने पाठ्यक्रम में पहले ही काफी बार उल्लेख किया है; हम अब इससे थक चुके हैं, लेकिन नंबर दो बाइबिल आलोचना के प्रति सकारात्मक रवैया है, बाइबिल आलोचना को वास्तव में गंभीरता से लेना, और यहां तक कि कट्टरपंथी बाइबिल आलोचना को भी बहुत गंभीरता से लेना। तो, बाइबिल आलोचना के प्रति सकारात्मक रवैया, बाइबिल आलोचना का स्वागत करना, इसकी सीमाओं को महसूस किए बिना, इसे पूरी तरह से आत्मसात करना।

तो, यह नंबर दो है। और नंबर तीन, आप इससे आश्चर्यचकित नहीं होंगे, लेकिन नंबर तीन ईसाई धर्म को सिद्धांतों के बजाय नैतिकता द्वारा परिभाषित करेगा। इसलिए, ईसाई धर्म को धर्म के धार्मिक आयामों के बजाय नैतिक जीवन और नैतिक जीवन द्वारा परिभाषित किया जाता है।

तो, जैसा कि हमने पाठ्यक्रम में सौ बार उल्लेख किया है, यीशु एक अच्छे इंसान बन जाते हैं। वे हमारे लिए एक अच्छे नैतिक उदाहरण बन जाते हैं। हम उस नैतिक उदाहरण का अनुसरण करना चाहते हैं।

तो, यह आधुनिकता है। 19वीं सदी में हमारे पास यही है। अब हम उत्तरआधुनिकतावाद के बारे में भी बात करने जा रहे हैं और सिर्फ उत्तरआधुनिकतावाद का जिक्र करेंगे।

मुझे एक व्यक्ति द्वारा उत्तरआधुनिकतावाद के बारे में कही गई बात पसंद आई। यह निश्चित रूप से एक अस्पष्ट और अपरिभाषित धारणा है। तो, उत्तरआधुनिकतावाद, गॉर्डन कॉलेज में अपने पाठ्यक्रमों में आप कितनी बार उत्तरआधुनिकतावाद के बारे में बात करते हैं? बहुत बार।

तो, यह एक अस्पष्ट और अपरिभाषित धारणा है। मुझे लगता है कि यह सही है। मुझे यकीन नहीं है कि यह वास्तव में क्या है, लेकिन मुझे लगता है कि जब मैं इसे देखता हूँ तो मुझे पता चल जाता है।

तो, हम जी रहे हैं, मुझे लगता है कि हम एक उत्तर-आधुनिक दुनिया में जी रहे हैं। तो, मैं जो करना चाहता हूँ वह चार तरह की विशेषताओं का उल्लेख करना है जो मुझे लगता है कि उत्तर-आधुनिकतावाद की विशेषताएँ हैं। अब, इन विशेषताओं के बारे में और सोचें।

उन्हें अन्य सभी पाठ्यक्रमों के संदर्भ में मत सोचिए। उन्हें सिद्धांत के संदर्भ में अधिक सोचिए। उन्हें धर्मशास्त्र के संदर्भ में अधिक सोचिए।

तो, यही वह चीज़ है जिसमें हमारी रुचि है। तो, ठीक है। ठीक है।

अब, सबसे पहली बात, बेशक, उत्तर आधुनिकतावाद में आत्मविश्वास नहीं है जिस तरह से ज्ञानोदय में तर्क की क्षमता, हमारे जीवन के लिए आधार प्रदान करने की तर्कसंगतता की क्षमता पर भरोसा था। इसलिए, यह भरोसा कि ज्ञानोदय में जीवन के लिए आधार बनाने के लिए बिना किसी सहायता के तर्क का उपयोग करना था, उत्तर आधुनिकतावाद में बाहर है। उत्तर आधुनिकतावाद अब इसे सच नहीं मानता।

तो, यह एक विशेषता है। ठीक है। दूसरी विशेषता।

और दूसरी विशेषता यह है कि तर्क उस जीवन के लिए नैतिक आधार प्रदान करने में सक्षम नहीं है जिसमें हम अभी रह रहे हैं। इसलिए, आप तर्क का उपयोग किसी तरह की नैतिकता प्रदान करने के लिए नहीं कर सकते। तो, यह नंबर दो है।

ठीक है। तीसरा नंबर है विद्रोह। किसके खिलाफ विद्रोह? दो चीज़ों के खिलाफ विद्रोह।

नंबर एक, यह अधिकार के खिलाफ विद्रोह है, चाहे वह चर्च का अधिकार हो, बाइबल जैसी किताब का अधिकार हो, या चर्च में नेताओं का अधिकार हो। लेकिन यह निश्चित रूप से अधिकार के खिलाफ विद्रोह है, इसमें कोई संदेह नहीं है। और यह परंपरा के खिलाफ विद्रोह है।

परंपरा के खिलाफ विद्रोह। मुझे 2,000 साल पुराने चर्च, चर्च की परंपरा, चर्च की पारंपरिक शिक्षाओं आदि के बारे में मत बताओ। हमें उन चीज़ों को जानने की परवाह नहीं है।

तो, यह ठीक है। और फिर, अंत में, नंबर चार एक तरह का सापेक्षवाद होगा। सापेक्षवाद एक तरह से उत्तर आधुनिक दुनिया में पनपता है क्योंकि हर कोई अपना काम करता है, और हर कोई अपने विचार सोचता है, और इसी तरह।

आपकी अपनी सोच, आपके अपने विचार, इत्यादि से परे कोई अधिकार नहीं है। इसलिए, मुझे लगता है कि उत्तर आधुनिकतावाद हमें यहीं ले गया है। फिर यह हमें नंबर दो और फिर नंबर तीन पर ले जाता है, स्वाभाविक रूप से, आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति।

लेकिन दूसरा नंबर ईसाई धर्मशास्त्र की ज्ञानोदय की आलोचना है। तो, ठीक है। ईसाई धर्मशास्त्र की ज्ञानोदय की आलोचना, और फिर हम वहां से कहां जाएंगे? मैं आपको पांच सेकंड का ब्रेक देने जा रहा हूं, हालांकि, क्योंकि हम यहां बहुत कुछ लिख रहे हैं।

आपके दिलों को आशीर्वाद मिले। आप इस थैंक्सगिविंग ब्रेक के लिए तैयार हैं। मैं बस आपको देख रहा हूँ।

आप इसके लिए तैयार हैं। आपको इसकी ज़रूरत है। आप इसके लिए बेताब हैं।

तो, क्या आप में से कोई आज कैंपस छोड़ सकता है? या क्या आपकी सोमवार को क्लास है? आपकी सोमवार को क्लास है। मंगलवार को क्लास है? मंगलवार को क्लास है। ठीक है।

तो, आप में से कुछ लोग आज कैंपस छोड़कर जा सकते हैं। ठीक है। ब्रेक के लिए दो सेकंड और।

चल रहा है ? आप वहाँ टिके हुए हैं? ठीक है। ईसाई धर्मशास्त्र की प्रबुद्धता की आलोचना। मुझे वास्तव में इस पर जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि ईसाई धर्मशास्त्र की प्रबुद्धता की आलोचना मूल ईसाई सिद्धांत की आलोचना है, और आपको पता होगा कि वे सिद्धांत क्या हैं।

ट्रिनिटी का सिद्धांत, क्राइस्टोलॉजी का सिद्धांत, पवित्र आत्मा का सिद्धांत, ईसाई जीवन का सिद्धांत। मेरा मतलब है, आप मेरे लिए उनका नाम बता सकते हैं। इसलिए, मुझे ईसाई धर्मशास्त्र की प्रबुद्धता की आलोचना, जिस तरह की चीज़ों के बारे में हम बात कर रहे हैं, या कुछ विशिष्ट मुद्दों पर जाने की ज़रूरत नहीं है।

अब, यह हमें तीसरे प्रश्न की ओर ले जाता है, आज ईसाई धर्मशास्त्र की प्रकृति। आज ईसाई धर्मशास्त्र के बारे में क्या? हम इसके साथ क्या करने जा रहे हैं? तो, ठीक है। खैर, अब हम इस सप्ताह होने वाले सम्मेलनों में इसे प्राप्त करेंगे।

हम लोगों को ईसाई धर्म के सिद्धांत की प्रकृति पर सभी तरह के दृष्टिकोण लेते हुए सुनेंगे। आज इसका क्या स्थान है? तो, ठीक है। खैर, मूल रूप से, यदि आप व्याख्यान में गए और इस सब के बारे में पढ़े जा रहे शोधपत्रों को देखा, तो आपको तीन दृष्टिकोण पेश किए जाते हुए सुनाई देंगे, और वे एक तरह से एक दूसरे के विरोध में हैं।

ठीक है? पहला स्थान निश्चित रूप से ईसाई सिद्धांत को बाहर फेंकना होगा। इससे छुटकारा पाएँ। और आपको इससे छुटकारा पाने की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि ईसाई सिद्धांत मेगा स्टोरी का प्रतिनिधित्व करता है।

ईसाई धर्म के सिद्धांत ईश्वर और सृष्टि तथा पतन और अनुग्रह द्वारा उद्धार आदि की बड़ी कहानी का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए, उत्तर-आधुनिक दुनिया में हमारे पास कोई बड़ी कहानी नहीं हो सकती। उत्तर-आधुनिक दुनिया में जो महत्वपूर्ण है वह है मेरी कहानी और आपकी कहानी, लेकिन हमारे पास कोई बड़ी कहानी नहीं हो सकती।

इसलिए, ऐसे बहुत सारे शोधपत्र प्रस्तुत किए जाएंगे जो वस्तुतः यही कहेंगे। ईसाई सिद्धांत को बाहर फेंक दो। ईसाई धर्मशास्त्र को बाहर फेंक दो क्योंकि वे बड़ी कहानी का प्रतिनिधित्व करते हैं, और हम बड़ी कहानी से निपट लेंगे।

हम अब इसे नहीं चाहते। हमें अब इसकी ज़रूरत नहीं है। सिर्फ व्यक्तिगत कहानी ही मायने रखती है।

तो, आप इस बारे में बहुत कुछ सुनेंगे। अब, अगर हम ऐसा मानते, तो हमारे पास यह कोर्स नहीं होता। हम पहले दिन ही रुक जाते और कहते, अच्छा सेमेस्टर बिताओ क्योंकि अगर तुम इसे फेंकने जा रहे हो, तो फेंक दो और इसका अध्ययन मत करो।

तो, ठीक है? तो, नंबर दो ईसाई सिद्धांत, ईसाई धर्मशास्त्र है। नंबर दो, एक दूसरे प्रकार का पेपर है जिसे आप सुनेंगे, आपको सिद्धांत को बनाए रखना होगा। आपको धर्मशास्त्र को बनाए रखना होगा।

और आपको ऐसा इसलिए करना चाहिए क्योंकि यह बाइबिल की कहानी की पुष्टि करने का सबसे उपयुक्त तरीका है। बाइबिल की कहानी, बाइबिल हमें कहानी देती है। ईसाई धर्मशास्त्र और ईसाई सिद्धांत कहानी और बाइबिल की व्याख्या करते हैं।

यह न केवल बाइबिल की व्याख्या करता है, बल्कि चर्च की परंपराओं की भी व्याख्या करता है। और मेरा मतलब है चर्च, बड़े अक्षर से, न कि आपके संप्रदाय या मेरे संप्रदाय से, बल्कि मसीह के शरीर से। आपने बहुत सारे पेपर सुने होंगे।

यह उस बात के बिलकुल विपरीत है जो हमने शुरू में कही थी। ठीक है। और फिर तीसरी बात जो हमने कही, वह शायद फिट हो जाए, यह दूसरी बात में फिट हो जाएगी, लेकिन यह पहली बात में फिट नहीं होगी क्योंकि पहली बात कहती है कि इसे सब बाहर फेंक दो, इसमें कुछ भी नहीं है।

लेकिन यह दूसरे में फिट होगा, लेकिन इस बारे में बहस होगी कि यह दूसरे में कैसे फिट होगा। तीसरे प्रकार का पेपर जो आप सुनेंगे, वह है, सिद्धांत और धर्मशास्त्र की वैधता का लगातार परीक्षण करना। यानी, सिद्धांत और धर्मशास्त्र ठीक है, लेकिन आपको वास्तव में इसका परीक्षण करना होगा।

आपको इसकी वैधता देखनी होगी। और आप इसे कहाँ वैध मानते हैं? आप देखते हैं कि यह व्यापक संस्कृति में, व्यापक दुनिया में, जिसमें आप रहते हैं, वैध है। क्या आप जिस सिद्धांत और

धर्मशास्त्र का समर्थन कर रहे हैं, उसकी कोई वैधता है? क्या यह व्यापक संस्कृति में वैध है? और क्या यह व्यक्तिगत आस्तिक के जीवन में वैध है? क्या इसकी वहाँ कोई वैधता है? मेरे पास एक शब्द है, क्या सिद्धांत और धर्मशास्त्र में कोई सामंजस्य है जो वास्तव में समझाने में मदद करता है, हमारे जीवन और जिस दुनिया में हम रहते हैं, उसे समझने में मदद करता है? इस तरह के विश्वास को नंबर दो से जोड़ा जा सकता है।

इसे पढ़ाया जा सकता है, और ऐसे लोग इसके पेपर पढ़ सकते हैं जो मानते हैं कि यह बाइबल की पुष्टि करने का तरीका है। लेकिन इसे ऐसे लोग भी पढ़ सकते हैं जो नंबर दो, बाइबल और चर्च की परंपराओं से अलग-थलग हैं, क्योंकि हर पीढ़ी में सिद्धांत हमेशा एक नई चीज़ होती है। इसलिए आपको यहाँ नंबर तीन के बारे में सावधान रहना होगा।

यह इस बात पर निर्भर करता है कि इसे मानने वाले लोग कौन हैं। यह इस बात पर निर्भर करता है कि वे बाइबल और चर्च की परंपराओं को कितनी गंभीरता से लेते हैं। लेकिन ये तीन राय होंगी कि आप ईसाई सिद्धांत के साथ क्या करते हैं और आपको आज ईसाई सिद्धांत और ईसाई धर्मशास्त्र को कैसे अपनाना चाहिए।

इसमें कोई संदेह नहीं है। तो ठीक है, अब हम नंबर एफ पर आते हैं; ईसाई धर्म खुद को और दूसरे धर्मों को देखता है। तो, हम सबसे पहले रोमन कैथोलिकों के साथ संवाद के बारे में बात करेंगे।

और मुझे नहीं पता, आप में से कुछ लोग उस पेपर में थे जो रोमन कैथोलिकों के साथ प्रोटेस्टेंटों के संवाद और एक्यूमेनिज्म पर प्रस्तुत किया गया था। लेकिन प्रोटेस्टेंट और रोमन कैथोलिकों के बीच संवाद, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, ऐतिहासिक परिवर्तन, संवादों की प्रकृति, और निरंतर सहमति और असहमति। तो, ठीक है, सबसे पहले, प्रोटेस्टेंटों का रोमन कैथोलिकों के प्रति और कैथोलिकों का प्रोटेस्टेंटों के प्रति ऐतिहासिक दृष्टिकोण है।

अब, आप में से कुछ ने मार्क नोल को सुना होगा, है न? क्या आप में से कुछ लोग मार्क नोल के व्याख्यान में नहीं गए थे? मुझे लगता है कि कुछ लोग गए थे। हाँ। वैसे, वह एक बढ़िया व्याख्यान था।

मेरा मतलब है, मुझे उम्मीद है कि आपको उनका पेपर बहुत पसंद आया होगा और आप उसमें डूब गए होंगे। लेकिन उन्होंने एक किताब लिखी है जिसका नाम है क्या सुधार खत्म हो गया है? और इस किताब में, क्या सुधार खत्म हो गया है? उन्होंने कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट के बीच संवाद के मुद्दे को उठाया है। यह एक बेहतरीन किताब है।

आपको इसे अपनी गर्मियों की पढ़ने की सूची में शामिल करना चाहिए। आपको ऐसा करना चाहिए, इसलिए हमने आपको आज जो दिया है, वह दिया है। कासा डिसिपलशिप, लाइफ टुगेदर, इज़ द रिफॉर्मेशन ओवर? तो, हमने आपको आपकी गर्मियों की पढ़ने की सूची के लिए कुछ अच्छी किताबें दी हैं। ठीक है।

पुस्तक में, उन्होंने प्रोटेस्टेंटों की रोमन कैथोलिकों के साथ समस्याओं और फिर रोमन कैथोलिकों की प्रोटेस्टेंटों के साथ कुछ समस्याओं के बारे में बात की है। तो ये ऐतिहासिक दृष्टिकोण हैं। तो, आइए हम उन कुछ समस्याओं का उल्लेख करें जो प्रोटेस्टेंटों को रोमन कैथोलिकों के साथ हैं।

उनकी एक समस्या यह है कि उन्हें लगता है कि सभी रोमन कैथोलिक हमें कर्मों से मुक्ति की शिक्षा देते हैं। इसलिए, प्रोटेस्टेंट वास्तव में सोचते हैं कि अच्छे कर्म करके मुक्ति पाना कैथोलिक तरीका है। इसलिए वे इस बात के लिए कैथोलिकों की आलोचना करते हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है।

उन्हें यह भी लगता है कि रोमन कैथोलिकों को बाइबल पढ़ने से रोका जाता है। उन्हें लगता है कि रोमन कैथोलिकों के प्रति प्रोटेस्टेंटों का यह ऐतिहासिक रवैया है। उन्हें बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने से रोका जाता है, और चर्च उन्हें बाइबल पढ़ने और अध्ययन करने नहीं देता।

उन्हें बाइबल तक पहुँच नहीं मिल सकती। तो यह उनका रवैया है। तो ठीक है।

उन्हें यह भी लगता है कि रोमन कैथोलिक चर्च में मैरी को बहुत ऊंचा स्थान दिया गया है। आपने मैरी को मसीह के साथ सह-मुक्तिदाता बना दिया है। आपने मैरी को ऊंचा स्थान दिया है।

रोमन कैथोलिकों ने मैरी को बहुत अधिक महत्व दिया है। तो, ठीक है। उन्हें यह भी लगता है कि रोमन कैथोलिक चर्च का पदानुक्रम, जिस तरह से रोमन कैथोलिक चर्च पोप से लेकर नीचे तक स्थापित है, उसने सभी विश्वासियों के पुरोहितत्व को छीन लिया है, रोमन कैथोलिकों से यह तथ्य छीन लिया है कि वे एक दूसरे के पुजारी हो सकते हैं।

शायद धर्मोपदेश देने या संस्कार देने में नहीं, लेकिन वे एक दूसरे के लिए प्रार्थना करने, एक दूसरे को सलाह देने और हर चीज में एक दूसरे के पुजारी हो सकते हैं। लेकिन प्रोटेस्टेंट सोचते हैं कि रोमन कैथोलिक एक दूसरे के पुजारी नहीं हो सकते, कि वे इस सख्त पदानुक्रम के कारण उससे वंचित हैं जिसके तहत वे शासित हैं। तो इस तरह का रवैया है।

दूसरी ओर, रोमन कैथोलिकों को प्रोटेस्टेंट से परेशानी है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण के संदर्भ में, रोमन कैथोलिकों को लगता है कि प्रोटेस्टेंट को समस्याएँ हैं। ठीक है।

मैं बताना चाहता हूँ, मेरे पास लगभग दो मिनट हैं, इसलिए मैं सिर्फ एक बात बताना चाहता हूँ। रोमन कैथोलिकों को लगता है कि प्रोटेस्टेंटों को बाइबल की व्याख्या करने में समस्या है। चूँकि बाइबल की व्याख्या चर्च द्वारा नहीं की जाती, इसका मतलब है कि हर टॉम, डिक और मैरी, हर टॉम, डिक और मैरी, हर किसी की बाइबल की अपनी-अपनी व्याख्या है।

और इसका क्या नतीजा होगा? कैथोलिक लोग प्रोटेस्टेंट के बारे में यही सोचते हैं। इसका क्या नतीजा होगा? इससे अराजकता फैलेगी। इसलिए जहां तक उनका सवाल है, यह बुरी खबर है।

दूसरा, कैथोलिकों को लगता है कि प्रोटेस्टेंट चर्च में पवित्र आत्मा के काम को नहीं समझते हैं। क्योंकि पवित्र आत्मा चर्च में, मसीह के शरीर में, विशेष रूप से चर्च के शिक्षण कार्यालयों के

माध्यम से काम करता है, ताकि लोगों को उनके स्वयं के उद्धार के संदर्भ में जो जानना चाहिए वह उन्हें दिया जा सके। रोमन कैथोलिकों को लगता है कि हम मसीह के शरीर में और हमारे माध्यम से काम करने वाली पवित्र आत्मा में प्रोटेस्टेंट की तुलना में कहीं अधिक समुदाय-उन्मुख हैं।

चूँकि प्रोटेस्टेंट बहुत दयालु और व्यक्तिगत हैं, इसलिए रोमन कैथोलिकों को लगता है कि प्रोटेस्टेंट ने मैरी की उपेक्षा की है। अब, जब हमने मैरी के बारे में बात की थी, तो हम पहले ही इस बारे में बात कर चुके हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि रोमन कैथोलिकों ने मैरी को बहुत ज़्यादा महत्व दिया है, और प्रोटेस्टेंटों ने मैरी को बहुत कम महत्व दिया है। लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं है कि उन्हें लगता है कि प्रोटेस्टेंटों ने मैरी को अस्वीकार कर दिया है और मैरी के बारे में पर्याप्त नहीं बताया है। वे मानते हैं कि प्रोटेस्टेंटों ने सात संस्कारों को त्याग दिया है, कि अधिकांश प्रोटेस्टेंटों ने रोमन कैथोलिकों के चर्च के सात संस्कारों को त्याग दिया है।

और हम पहले ही उन सात संस्कारों के बारे में बात कर चुके हैं और उनका उल्लेख कर चुके हैं। और उन्हें लगता है कि प्रोटेस्टेंट ने वहां अच्छा काम नहीं किया है। और फिर अंत में, वे मानते हैं कि रोमन कैथोलिक मानते हैं कि प्रोटेस्टेंट प्रेरितिक उत्तराधिकार और प्रेरितिक अधिकार को नहीं समझते हैं।

ऐसा बिशपों, परिषदों और पोपों के प्रेरितिक अधिकार के कारण है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रोटेस्टेंटों ने चर्च के शिक्षण कार्यालयों के उस प्रेरितिक अधिकार को बनाए नहीं रखा है, इसलिए उन्होंने हर किसी की राय, धर्मनिरपेक्षता और इसी तरह के अन्य पहलुओं के लिए दरवाजा खोल दिया है। इसलिए, इस तरह के ऐतिहासिक दृष्टिकोण हैं।

और अगली बार जब हम व्याख्यान देंगे, जो कि एक या डेढ़ सप्ताह तक नहीं होगा, लेकिन हम जो करेंगे वह यह है कि हम क्राइस्टोलॉजी, ईसाई धर्म को अन्य धर्मों में देखने के संदर्भ में इसे समाप्त करेंगे। फिर, मैं पाठ्यक्रम के समापन के बारे में कुछ टिप्पणियाँ करूँगा। ठीक है।

मुझे उम्मीद है कि आपका थैंक्सगिविंग सप्ताह शानदार रहेगा। जब भी इसकी शुरुआत होगी, आप में से कुछ के लिए यह ठीक इसी क्षण शुरू हो सकता है जब आप घर से बाहर निकलेंगे। आपके दिलों को आशीर्वाद मिले। मुझे नहीं पता कि यह कब शुरू होगा, लेकिन थैंक्सगिविंग का यह सप्ताह शानदार रहे।

जब हम वापस आएं, तो हम सोमवार और बुधवार को वीडियो देखेंगे। बुधवार को, आप मुझे अगले शुक्रवार और उसके बाद के बुधवार के लिए बुधवार के टेक्स्ट से चार प्रश्न दे रहे हैं। हम सभी इस बारे में स्पष्ट हैं।

हम सब इसके लिए तैयार हैं। आपका थैंक्सगिविंग डे बहुत बढ़िया हो। मिलते हैं।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह डिट्रिच बोनहोफर पर सत्र 26 है।